



पाश्चात्य युग में काव्य सम्बन्धी विचार

डॉ. रघु पटेल

अध्यापक,

भवन्स आर्ट्स एन्ड कॉमर्स कॉलेज, डाकोर

काव्य के लक्षण प्रस्तुत करने में मुख्य रूप से काव्य-सृष्टा मनीषी कवि, सहृदय, सामाजिक और आस्वादक समीक्षक प्रधान हैं। पाश्चात्य काव्य-समोक्षा के उदय काल से लेकर अब तक की, जब हम इस लम्बी, काव्य-लक्षण सम्बन्धी परम्परा पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि समय विकास के साथ ही वैचारिक परिपक्वता और तर्क की प्रधानता बढ़ती गई है और काव्य-लक्षण निधरण में सामाजिक स्तर पर पडनेवाले प्रभाव का केन्द्र समष्टि से व्यष्टि को ओर बदलता रहा है। समाजशास्त्री आदर्श आचार्य प्लेटो (४२७-३४८ ई, पूर्व) कविता को सामाजिक कसौटी पर परखते हुए घोषणा करते हैं कि सामाजिक न्याय-नियम की उपेक्षा करके कोई कविता सिद्ध नहीं हो सकती। वे उपयोगिता को ही कविता की मुख्य कसौटी मानते हैं, सौन्दर्यशास्त्री दृष्टिकोण को नहीं।¹ प्लेटो दार्शनिक और सुधारवादी समीक्षक के रूप में, महान और शाश्वत की खोज करते हुए, कविता की कसौटी 'सत्य' को माना है, आनन्द को नहीं। उसके अनुसार कविता सामाजिक सीमाओं में ही सहृदय को आनन्द देती है। वह कविता के आकर्षण को great and noble के सन्दर्भ में समाज की सीमा के अन्तर्गत ही स्वीकार करता है।² प्लेटो अपने इसी आदर्श के कारण होमर को कविता को आनन्ददायिनी मानता है।³

प्लेटो के पूर्व भी, यदि यूनानी साहित्य का अवलोकन किया जाए तो, हम देखते हैं कि तबतक काव्य सम्बन्धी धारणा स्पष्ट हो चुकी थी। होमर की कविता में आनन्द तत्व को प्लेटो ने स्वीकार किया है। हेसियड अनतःप्रेरणा को कविता का हेतु मानते हुए भी, उसमें शिक्षा और आदर्श की प्रधानता मानता है। उसकी कविता work and days जनकल्याण की भावना से प्रेरित है। इस सम्बन्ध में Reader's companion to word literature के विचार पठनीय हैं-

'The work and days is a didactic poem, and the lesson it teaches is that man must work. hesiod has nothing to tell of the glorious deeds of godlike kings. His theme is the hard life of the peasants' - p.209.

ग्रीक कवि पिन्डार के गीतों से प्रतीत होता है कि वह काव्य के लिए प्रतिभा को महत्व देता था। अपनी रचनाओं में उसने स्थान-स्थान पर नैतिक अनुदेशों का भी उल्लेख किया है।⁴ गोज़ियास ने काव्य के अभिव्यक्ति पक्ष के सम्बन्ध में कहा है- कथित शब्द में महान शक्ति होती है। इसके द्वारा भय तथा दुःख का शमन होता है और आनन्द तथा आत्मविश्वास का प्रकाश।⁵ गोज़ियास काव्य की शक्ति को मोहित करने में समर्थ मानता है। उसके अनुसार कविता विश्वास उत्पन्न कर अपने जादू के प्रभाव से आत्मा में परिवर्तन करने में समर्थ होती है।⁶ एरिस्टोफेन्स ग्रीक साहित्य के प्रसिद्ध कामदीकार एवं कवि माने जाते हैं। इनके द्वारा लिखे चालीस नाटक माने गए हैं, जिनका विषय सामाजिक चेतना है। एरिस्टोफेन्स का काव्यदर्श सकारणता एवं यथार्थ पर निर्भर है।⁷

जहाँ प्लेटों की कविता सम्बन्धी धारणा मूल प्रकृति, सत्य, शाश्वत की अनुकृति पर निर्भर है और वह कल्पना तत्व के कारण, अनुकरण का अनुकरण मानते हुए, कविता को सत्य से दुगना दूर मानता है। उसकी स्पष्ट उक्ति है कि कविता द्वारा भावावेश पुष्पित और पल्लवित होता है। अतः कविता आदर्श नगर के नागरिक के लिए

खतरनाक सिद्ध हो सकती है। प्लेटों के शिष्य अरस्तू ने अपने गुरु की कविता सम्बन्धी अनुकरण की धारणा⁸ को तो स्वीकार किया है; किन्तु उसकी व्याख्या बदल दी है। वह काव्य हेतु के रूप में दो कारण मानता है। पहला कारण है कि मानव में शैशव काल से ही अनुकरण की सहज वृत्ति होती है। मनुष्य सब कुछ अनुकरण से ही सीखता है। काव्य की दूसरी सहज वृत्ति सामञ्जस्य और लय की है। इन वृत्तियों के सहचार से मनुष्य शनः शनैः अपनी विशिष्ट वृत्तियों का विकास करता चलता है। अरस्तू, प्लेटों की इस बात का भी प्रतिवाद करता है कि कविता का सम्बन्ध मात्र नैतिकता से है। अरस्तू कलाकृति को, चाहे वह कविता हो अथवा चित्र, सौन्दर्य की वस्तु मानते हुए आनन्द प्रदायक मानता है। वह काव्य को आत्मा का स्वतन्त्र व्यापार मानता है। त्रासदी के प्रसंग में जीवन को साहित्य का अंग माना है।

The matter of literature is life, and tragedy is, in a special sense the 'imitation of life' of human welfare and human misery, it is the representation of a sustained action of a great and serious kind, in which character find for itself outward and energetic expression.'

-Aristotle's theory of poetry and fine art.p.226

ग्रीक आचार्य- प्लेटो और अरस्तू- की कविता सम्बन्धी धारणा से प्रभावित होकर आचार्य लौगिनस तथा रोमी अचार्य होरेस, सिसरो, वर्जिल, क्विण्टीलियन आदि के काव्य सम्बन्धी विचार भी कविता के लक्षण निर्धारण करने में सहयोगी हो सकते हैं या नहीं, यह कहना तो कठिन है; किन्तु, यूनान के पश्चात उसका प्रभाव कितना प्रभावी रहा है और मौलिक चिन्तन के रूप में ईसा की प्रथम शताब्दी के आस-पास कविता सम्बन्धी क्या धारणा थी, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

लौगिनस की काव्य शास्त्रीय पुस्तक पेरे इप्सुस में उदात्त को काव्य की आत्मा माना गया है। उदात्त की परिभाषा देते हुए बताया गया है कि अभिव्यक्ति की श्रेष्ठता और विशिष्टता का नाम उदात्तता है। काव्य के सम्बन्ध में विचार करते हुए लौगिनस ने काव्य के अभिव्यक्ति पक्ष पर अधिक ध्यान दिया है।⁹ वह मानता है कि उक्ति की महानता कवि के व्यक्तित्व में विद्यमान रहती है। वह कविता में कल्पना और भावावेश को भी महत्व देता है। इनके माध्यम से ही काव्य का कथ्य पाठक या सहृदय तक पहुंच सकता है।¹⁰ लौगिनस का शैली-सिद्धान्त अनुभूति की प्रखरता और सहजता पर निर्भर करता है। उसकी दृष्टि में, हृदय से निकली हुई कविता पाठक को आत्म विस्मृत करने में समर्थ होती है। उसकी मान्यता है कि प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रभाव अवश्य पड़ता है। लौगिनस औदात्य के माध्यम से काव्योक्ति के सामञ्जस्य अथवा सन्तुलन पर बल देता है।¹¹

होरेस की गीति-रचनाएँ, लघुगीत, व्यंग, पत्रकाव्य और काव्यकला कृतियाँ हैं, जिनमें प्रसंगवश कला विषयक समीक्षा अथवा कहीं कहीं काव्यकला के विषय में जानकारी मिल जाती है, विशेषकर आर्स पोएटिका में। काव्य के सम्बन्ध में होरेस की धारणा है कि- कविता चित्रकारी की तरह होती है। कोई चित्र आपको निकट से अच्छा लगता है, कोई दूर से। कोई मन्द प्रकाश में अच्छा लगेगा, कोई तेज प्रकाश की पृष्ठभूमि में। किसी के प्रति आकर्षण एक बार होकर रह जाता है, किसी के प्रति बार-बार होता है।¹²

कविता के प्रभाव के सम्बन्ध में होरेस की मान्यता है कि कविता पाठक में वीरत्व और विवेक जागृत करती है और इससे पाठक के क्षण आनन्दपूर्वक व्यतीत होते हैं। इसलिए वह दिव्य वस्तु है। वह मनोवैगों को आन्दोलित करने में सक्षम है। अच्छी कविता वही होती है, जिसमें प्रतिभा और शिल्प का सुन्दर सामञ्जस्य हो।

काव्य समीक्षा में सिसरो का महत्व आचार्य होरेस के समकक्ष तो नहीं है; फिर भी रोमी आचार्यों में उनका नाम आदर से लिया जाता है। आपने वक्तृत्व कला के प्रसंग में काव्य अध्ययन की आवश्यकता पर विशेष बल दिया है। वक्ता और कवि का निकट का सम्बन्ध बताते हुए सिसरो ने लिखा है कि दोनों ही अपनी लय को नियन्त्रित करते रहते हैं और शब्दों के चयन में स्वतन्त्र रहते हैं। सिसरोने काव्य में युवावस्था का भोजन और वृद्धावस्था का आनन्द निहित बताया है। ये रचनाएँ सुख समृद्धि को बढ़ावा देती हैं, सौभाग्य को सहारा देती हैं, आनन्द प्रदान करती हैं, और बाहरी कोई रुकावट पैदा नहीं करती और हमारे अवकाश के क्षणों को बांट लेती हैं।¹³

लैटिन भाषा के कवि के रूप में वर्जिल को रोमी कवियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। वर्जिल के काव्यसम्बन्धी विचार उसकी कविताओं से जाने जाते हैं। उसकी रचनाओं का एक संग्रह 'Eclogues' नाम से है। इन रचनाओं में प्रकृतिप्रेम उभरकर आया है। लोकजीवन के प्रति उसकी सहृदयता द्रवित हुई है। अपने जीवन के ५१ वर्षों में ही इसे महाकवि के रूप में ख्याति प्राप्त हो गई थी। एनीड उसका अपूर्ण महाकाव्य है, जिसमें नैतिक आदर्शों को प्रधानता देते हुए, राष्ट्रभावना से प्रेरित होकर रोम को राष्ट्रदेवता के रूप में चित्रित किया है।¹⁴ वह नैतिक आदर्शों से रहित काव्य की कल्पना नहीं करता।

क्विण्टीलियन ने भी कर्तृत्व कला के प्रसंग में ही काव्य के सम्बन्ध में अपनी धारणा व्यक्त की है। अपनी कृति वक्ता की शिक्षा में उसने काव्य को पाँच विभागों में बाँटा है। महाकाव्य, गीतिकाव्य, कोमेडी, ट्रेजडी और व्यंग्य काव्य। उसने काव्य-समीक्षा के उदाहरणों में महाकवि होमर को महाकाव्य के क्षेत्र में, हैसियड को अपनी शैली के क्षेत्र में, पिण्डर को वाक्य-विन्यास की दृष्टि से महत्व प्रदान किया है। साथ ही वह काव्यकला से वक्तृत्वकला को श्रेष्ठ मानता है; क्योंकि, कविता का आनन्द अविश्वसनीय बातों पर निर्भर करता है। वैसे भी कविता वक्तृत्व की भाँती ऋजु-मार्ग का अवलम्बन नहीं कर पाती।¹⁵

पादनोंध

1. No Poet is to compose any verses which offend the views of law and justice, of beauty and goodness, professed by the state, or to publish any composition until it has been seen and approved by the proper Judges and guardians of the law.

Law, 801 C-D

2. Let us assure the poetry, which aims at pleasure and the art of imitation, that if she will only prove her title to exist in a well ordered state, we shall be delighted to receive her; we are very conscious of her charms.

Dialogues of plato, (B. Jowett) Vol. II. p.484

3. The best of us ,as I conceive when we listen to a passage of Homer, or one of the tragedians, the best of us , you know ,delight in giving way to sympathy'

Dialogues of plato, (B.Jowett) Vol.II.p.488

4. 'Thus by means of mythology, pindar links the glory of the past to the glory of the present, While at the same time he creates an appropriate atmosphere for the moral and religious instruction he weaves into her verses'

The Reader's Companion to world Literature -p.334

5. देखिए- आलोचना इतिहास तथा सिद्धान्त ,पृ ४१

6. देखिए- Literary criticism in Antiquity ,by J.W.H. Atkins .P.18

7. 'I (Aristophanes) put things on the stage that come from daily life and business; I mingled reasoning with my art, and shrewdness, till I fired their heart.'

The making of literature, p.28

8. 'First , the instinct of imitation is implanted in man from childhood, and through imitation learns his earliest lessons and no less universal is the pleasure felt in things imitated Next there is instinct for 'harmony' and 'rhythm, metres being manifestly sections of rhythm.'

Aristotle's Theory of poetry and fine Arts, (S. H. Butcher), P.15

9. 'A lofty passage does not Convince the reason of the reader, but takes him out of himself ,that which is admirable ever confounds our judgment and eclipses that which is more reasonable or agreeable'

On the sublime, ed by T.A. Moxon.

10. '..... Nothing is so conducive to sublimity as an appropriate display of genuine passion , which bursts out with a kind of fine madness and divine inspiration and falls on our ears like the voice of a god '

On the sublime,

11. किसी उक्ति के औदात्य का एक प्रमुख कारण, मानवशरीर की रचना की भाँती ही, उसके विभिन्न अंगों के निवेषण में है, जिनमें अलग अलग रहने पर कोई विशेषता नहीं होती; किन्तु, सब मिलकर एक समग्र और सम्पूर्ण शरीर की रचना करते हैं। इसी प्रकार गरिमा के तत्वों को यदि एक-दूसरे से अलग कर दिया जाए, तो उनके साथ औदात्य भी इधर-उधर बिखर जाता है; किन्तु, जब उनको मिलाकर एकान्वित कर दिया जाता है और फिर सामंजस्य की श्रृंखला में बाँध दिया जाता है, तो वे अपनी वर्तुलता के कारण ही कर्णमधुर हो जाते हैं।

काव्य में उदात्त तत्व, पृ-१०७

12. The arts poetica of Horace is a climax to all this history in the neat Compression of his statement about a choice that was no choice at all. People like to ask whether a good poem comes natural or is produced by craft. So far as I can see, neither book. Learning without a lot of neither inspiration nor unimproved genius can get very far. The two things work together and need each other.

Literary Criticism: A Short History .p-93

13. देखिए – 'Literary Criticism: A Short History.

14. In the Eclogues he gave pastoral poetry its permanent direction. In the Georgics he created a type poem completely new. In the Acneid he not only expressed the hopes and aspirations of a whole nation, he went beyond this to reveal the mustery of the sadness that lies at the heart of life'

The Reader's Companion to world Literature, p-47

15. '..... One must remember that Quintilian (Marcus fapius Quintilian us) is judging the writers he discusses solely for their value to an orator.

The Reader's Companion to world Literature, p-372